



## शिक्षा और संस्कृति पर कृत्रिम बुद्धिमत्ता का प्रभाव

डॉ सुमन बाला, सहायक आचार्य, सोभासरिया ग्रुप ऑफ़ इंस्टीट्यूशनस, सीकर Suman.bala@secs.ac.in

### Abstract

कृत्रिम बुद्धिमत्ता ने शिक्षा और संस्कृति दोनों क्षेत्रों में क्रांतिकारी परिवर्तन किए हैं। इसका प्रभाव सकारात्मक और नकारात्मक दोनों रूपों में देखा जा सकता है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित प्लेटफॉर्म ने छात्रों को अनुकूलित शिक्षण सामग्री प्रदान करने में काफी योगदान दिया है जो कि छात्रों की क्षमता और रुचि के अनुकूल होता है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता न केवल छात्रों के लिए ही उपयोगी है बल्कि शिक्षकों को भी मूल्यांकन, पाठ योजना और डेटा विश्लेषण में मदद करता है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता टूल्स द्वारा शिक्षा को सुलभ बना दिया गया है। भाषाई बाधाओं को दूर करने में काफी सहायता मिल रही है। इस भांति कृत्रिम बुद्धिमत्ता का संस्कृति पर भी गहरा प्रभाव पड़ा है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित तकनीक द्वारा प्राचीन भाषा और साहित्य सरलता से प्राप्त हो रहा है और इसे संरक्षित भी रखा जा रहा है। सांस्कृतिक आदान-प्रदान को भी इस द्वारा बढ़ावा मिल रहा है जिससे विभिन्न संस्कृतियों एक दूसरे के करीब आ रही हैं। कला, साहित्य और संगीत में भी नये रचनात्मक परिवर्तन आए हैं। जहां कृत्रिम बुद्धिमत्ता के सकारात्मक प्रभाव हैं वहीं इसके कुछ नकारात्मक पहलू भी हैं। कृत्रिम बुद्धिमत्ता पर अत्यधिक निर्भरता के कारण छात्रों की सोचने समझने की क्षमता रचनात्मकता, मौलिकता और आलोचनात्मक सोच के विकास में कमी आ रही है। वहीं इसके अत्यधिक प्रयोग से संस्कृति पर भी प्रभाव पड़ रहा है स्थानीय परंपराओं और भाषाओं के विलुप्त होने का खतरा मंडरा रहा है। नकारात्मक पहलुओं के बावजूद भी कृत्रिम बुद्धिमत्ता ने शिक्षा और संस्कृति को अधिक समृद्ध, सुलभ और वैश्विक बनाया है।

